फरीदाबाद

मजदूर समाचार

हर जगह, सब से, जब भी समय मिले

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें—
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर **316** 1/— *अक्टूबर* **2014**

उपजाऊ टैन्शन को फैलाना

जगह-जगह, दैनिक, आम बातचीत में कुछ लाइनें स्पष्ट रूप से बोलने और सुनने में रहती हैं।

✶ हमारे कोई अधिकार नहीं हैं।

✶ जीवन में बहुत टैन्शन हैं।

✶ कम्पनी किसी की नहीं होती।

क्या ये असहायता, बेचारगी और नासमझी के आसार हैं ? या फिर, क्या ये कथन, ये बातें किसी गहरी समझ को व्यक्त करती हैं?

इस बारे में अपना जवाब हमें जरूर भेजिये। या, मजदूर समाचार लेते वक्त कुछ समय निकाल कर इस पर बातचीत करें। फिलहाल, हमारी सोच कुछ इस तरह है —

कानूनी तौर पे, आज फैक्ट्रियों में काम करते नब्बे प्रतिशत लोग इन्डस्ट्रियल डिस्प्यूट्स ऐक्ट के तहत मजदूर नहीं हैं। कम्पनी रोल पर लगातार 240 दिन काम करने पर ही औद्योगिक विवाद अधिनियम के अनुसार कोई कानूनी तौर पे मजदूर बनती-बनता है। अधिकार की भाषा इन 240 दिनों के पूरा होने के बाद ही आती है। फैक्ट्रियों में काम करने वाले नब्बे प्रतिशत लोग या तो कम्पनियों द्वारा रोल पर नहीं रखे जाते या उनके 240 दिन पूरे नहीं होने दिये जाते। तो जब कोई बोलता है कि उसके कोई अधिकार नहीं हैं, तो वो बिलकुल ठीक बोलती है — क्योंकि कानूनी तौर पे उसका कोई अधिकार नहीं है।

पिछले ही अंक में एक फैक्ट्री से रिपोर्ट है कि तीन मंजिला फैक्ट्री में कार्यरत सभी 1000 लोग कम्पनी के रोल पर नहीं हैं। रिपोर्ट अनुसार उन सब ने पाँच महीने में तीन बार काम रोका और दस दिन लगातार ओवर टाइम से इनकार किया। ये निर्णायक, निरंतर कदम उठाना अधिकार नहीं होने की समझ से आता है। ये समझ सामुहिकता की धार को तीखा करती है। गाँठों को यूँ निर्णायक, सामुहिक रूप से काटना निरंतर फैलती हुई प्रक्रिया है, प्रयोग है, जो सभी औद्योगिक क्षेत्रों में हैं। निहत्थे, अधिकारहीन लोग सहज ढँग से बहुत बड़े परिवर्तन में होते हैं, परिवर्तन ला रहे हैं।

इस माहौल में व्यक्ति हर पल अपने अनुभवों, अपनी अभिव्यक्तियों, अपने प्रयोगों, अपनी समझ की गति और उसके उतार-चढाओं को महसूस करते हैं। तीव्रता से, तीक्ष्णता से महसूस करते हैं। इसके वर्णन के प्रयास, संक्षिप्त ढँग से कहने की कोशिश में टैन्शन शब्द उभरता है। कई फैक्ट्रियों में मैनेजमेन्टों के कब्जे ढीले करने, कब्जे हटाने के दौरान कुछ टैन्शनों से मुक्त होने का अहसास होता है और कुछ नये टैन्शन उजागर होते हैं। मन्थन अति तीव्र हो जाता है। तरह-तरह के प्रभाव और बल टकराते हैं। व्यक्ति के और समूह के प्रयोग, समझ, अनुभव, अभिव्यक्तियाँ प्रभाव पैदा करते हैं, बल लिये हैं। यह टकराते हैं अन्य प्रभावों व बलों से। इस सब को एक-दूसरे के बीच हर वक्त संक्षेप में टैन्शन शब्द के जरिये रखा जाता है, व्यक्त किया जाता है। विस्तार में जो बातें होती हैं, जिन्हें हम मजदूर समाचार में देते रहते हैं, वे टैन्शन शब्द का खुलासा होती हैं। टैन्शन को मात्र नकारात्मक लेना एकपक्षीय है। टैन्शन में अधिक महत्वपूर्ण है उसका निर्माणाधीन, उसका रचनात्मक पहलू। कोई नई सम्भावनायें अपने को सामने लाने की, खुले में आने की कोशिशें करती हैं तब वे मौजूद हावी प्रभावों से टकराती रहती हैं। यह टकराना उपजाऊ टैन्शन है। यह स्वागत-योग्य टैन्शन है। इसीलिये टैन्शन को आँकना, परखना, छानबीन करना अधिकाधिक आवश्यक होता जा रहा है।

इस सितम्बर में ही एक फैक्ट्री में कार्यरत महिलाओं ने काम करने से इनकार कर दिया। फैक्ट्री के बाहर 300-400 महिलायें और 100-150 पुरुष दो हफ्ते दिन-रात जमे रहे। बहुत फैक्ट्रियों में कार्यरत लोगों ने फैक्ट्री के बाहर जमे-डटे लोगों की सराहना की और उनके टैन्शन की चर्चा की। लेकिन, कम ही लोग उनके उपजाऊ टैन्शन में शामिल हुये। जबकि, बहत आसान था शिफ्ट छूटने पर किसी भी फैक्ट्री के 30-40 का इकट्ठे हो कर उनके पास जा कर घण्टा-दो घण्टा साथ बैठना। औद्योगिक क्षेत्रों में हजारों फैक्ट्रियाँ आसपास हैं। ऐसे में जहाँ भी और जब भी कोई टैन्शन उभरे तब उसके उपजाऊ प्रभाव को बहुत आसानी से, बहुत तेजी से, बहुत विस्तार से, बहुत गहनता से, प्रचुर मात्रा में उत्पन्न किया जा सकता है। हम कारगर और निर्णायक को ढूढँते हैं, जबकि हमारे सामने है, हमारी पहुँच में है अत्यन्त बलशाली और सहज उपजाऊ टैन्शन। 18 जुलाई 2012 को एक बेहद उपजाऊ टैन्शन उभरा था। औद्योगिक क्षेत्र की हजारों फैक्ट्रियों में कार्यरत स्त्री और पुरुष, युवक और युवती उस बेहद सम्भावनायें लिये उपजाऊ टैन्शन में शामिल होते तो यह सम्भव नहीं था कि मारुति सुजुकी मानेसर के 147 मजदूर आज भी राजनैतिक कैदी बनाये रखे जा सकते।

मैनेजमेन्टों से टकरावों में उपजाऊ टैन्शनों से गुजरते हुये लोगों में एक बहुत गहरी समझ आ चुकी है। यह समझ है : "कम्पनी किसी की नहीं होती।" सुपरवाइजरों-मैनेजरों-जनरल मैनेजरों को नौकरियों से निकाला जाना आम बात बन गई है। पिछले कुछ अंकों में ही — कैन्टीन में भोजन कम पर उत्पादन रोके जाने में एक जनरल मैनेजर की नौकरी चली गई; लोगों के ओवर टाइम पर नहीं रुकने पर एक और जनरल मैनेजर की नौकरी चली गई; माल रिजेक्ट हो कर वापस आने पर एक क्वालिटी मैनेजर की नौकरी चली गई। सी ई ओ, मैनेजिंग डायरेक्टर, चेयरमैन के इस्तीफे अथवा उनकी बर्खास्तगी भी आम बात है। कम्पनी में लगे धन का नब्बे प्रतिशत कर्ज से आता है। बाकी बचा दस प्रतिशत भी किसी व्यक्ति-विशेष का पैसा नहीं होता, बल्कि यह भी करोड़ों शेयरों के जरिये जुटाया जाता है। कम्पनियों का दिवालिया होना आम बात है। और, बहुत लोगों के अनुभव में रहा है कि जिन्होंने कम्पनी से वफादारी की उन्हें काम निकल जाने पर धार पर धरे जाने में एक मिनट नहीं लगती। कम्पनी किसी की नहीं होती और कोई कम्पनी का नहीं होता-होती। लोगों का कम्पनियों से, संस्थाओं से कोई लगाव नहीं रहा है। कम्पनी में कार्यरत नब्बे प्रतिशत लोग कम्पनी के रोल पर नहीं और कम्पनी में लगे धन का नब्बे प्रतिशत कर्ज से आता है। ■

कानून कम्पनियों की जेबों में
मन, मस्तिष्क, हाथों की ताकत मजदूरों में

✶ प्लॉट 4 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित जे. एन. एस. इन्सट्रुमेन्ट्स, जय उशिन, जय ऑटो फैक्ट्रियाँ जे. पी. मिण्डा समूह की जापान मुख्यालय वाली कम्पनियों के साथ संयुक्त उपक्रम हैं। इन फैक्ट्रियों में काम करते 3500 मजदूरों में 2500 महिला मजदूर हैं। इस वर्ष फरवरी और फिर मार्च माह में महिला मजदूरों की अगुआई में उठे कदमों के परिणामस्वरूप तनखा में 1000 रुपये बढाये गये और ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से आरम्भ किया गया। तीन अलग कम्पनियों की तीन अलग फैक्ट्रियों का वर्षों से प्रवेश तथा निकास का गेट एक ही था पर मजदूरों की बढती हलचलों के दृष्टिगत अगस्त माह से चार गेट बना दिये गये। और, ***जे. पी. मिण्डा समूह*** तथा ***उशिन लिमिटेड, जापान*** के संयुक्त उपक्रम ***जय उशिन*** गेट पर 12 सितम्बर को सुबह 9 बजे कम्पनी बसों से पहुँची 300 महिला मजदूरों ने फैक्ट्री में प्रवेश किया पर कार्यस्थलों पर नहीं गई। इन महिला मजदूरों के साथ 100 पुरुष मजदूर भी खड़े हो गये। हड़बड़ाये साहबों ने समय माँगा, तीन महीने का समय दे दो...... एक घण्टे में एक बड़ी बस तथा दो मिनी बसों में लेडीज पुलिस के संग पुरुष पुलिस वाले फैक्ट्री पहुँच गये। तब साहब बोले कि काम करो अन्यथा फैक्ट्री के बाहर जाओ। सब मजदूर फैक्ट्री के बाहर आ कर बैठ गये। साँय 6½ बजे कम्पनी बसें आई तो महिला मजदूर उन में बैठ कर अपने निवास स्थानों पर चली गई।

13 सितम्बर को सुबह फिर बसों में महिला मजदूर आई। फिर गेट के अन्दर गई, काम शुरू नहीं किया, फिर गेट के बाहर आ कर बैठी। साँय 6½ बजे कम्पनी बसें आई तो महिला मजदूर बसों में नहीं बैठी और महिला मजदूरों का रात को भी फैक्ट्री गेट के बाहर बैठने का सिलसिला आरम्भ हुआ।

12 सितम्बर को जो थोड़ी-सी महिला मजदूर जय उशिन फैक्ट्री के अन्दर काम करने गई थी उनके अनुसार कम्पनी बहुत डरी हुई थी और 13 को तो अन्दर दहशत का माहौल था। चाय के लिये नीचे जाने से मना कर दिया, चाय ऊपर ही आ गई, लाइन लीडर कह रही थी कि नीचे जाओगे तो बाहर वाली लड़कियाँ खींच कर ले जायेंगी, गेट पर ताला। साँय 5½ छुट्टी होनी थी, नहीं हुई। रात 8 बजे छोड़े और गाड़ी जय उशिन गेट के बजाय जे एन एस गेट से निकाली। पुलिस थी तभी गाड़ी निकलने दी। आई. टी. आई. किये लड़के कम्पनी ने भर्ती करने शुरू किये..... और, 18 सितम्बर को दोपहर होण्डा फैक्ट्री की बगल में आई. टी. आई. किये एक युवा मजदूर ने बताया : यहाँ प्लॉट 14 सैक्टर-3 स्थित ***किरण उद्योग*** में मई में लगा था तब तनखा 7500 रुपये बताई पर दी 6000 तो जून में छोड़ दी और सैक्टर-8 में ***बी 2 रीटेल*** में लगा जहाँ से सितम्बर में निकाल दिया क्योंकि यह वेयर हाउस झज्जर जा रहा है। तब 15 सितम्बर को जय उशिन में लगा और देखा कि पुराने वरकर बाहर बैठे हैं। ऐसे में तय किया कि अन्दर काम नहीं करूँगा, दो दिन बाद, 17 सितम्बर को जय उशिन छोड़ दी। अभी एक फैक्ट्री में इन्टरव्यू दे कर आ रहा हूँ और रात की शिफ्ट में वहाँ काम शुरू करूँगा।

14 सितम्बर, रविवार को मैनेजमेन्ट बसों में कुछ वरकरों को जय उशिन फैक्ट्री में ले जाने लगी तो बाहर बैठी महिला मजदूर उन्हें रोकने को आगे बढी और लेडीज पुलिस ने लाठी चार्ज किया। मजदूर दिन में मैटेरियल रोकने लगे तब फिर लेडीज पुलिस और जैन्ट्स पुलिस ने लाठी चार्ज किया। फैक्ट्री गेट के सामने से हठा कर पुलिस ने अपनी गाड़ियाँ वहाँ खड़ी कर दी थी इसलिये सब मजदूर कुछ दूर सड़क किनारे बैठे थे। फैक्ट्री से बाहर टंकी में आ रहा पानी मैनेजमेन्ट ने 12 सितम्बर से ही काट दिया था। चींटे और मच्छर तो थे ही, 14 सितम्बर वाले रविवार की रात तो दारू पीये लफंगों ने गाड़ी में चक्कर भी काटे।

जहाँ जय उशिन मजदूर बैठे थे वहाँ से सैक्टर-3, सैक्टर-4, सैक्टर-5, सैक्टर-6, सैक्टर-7, सैक्टर-8 स्थित हजारों फैक्ट्रियों के काफी मजदूर रोज गुजरते हैं। रात-दिन फैक्ट्री के बाहर बैठे मजदूरों की चर्चायें हजारों फैक्ट्रियों में होने लगी। मीडिया के लोग भी वहाँ पहुँचे। कुछ फैक्ट्रियों से यूनियनें समर्थन करने आई। जय उशिन में कोई स्थाई मजदूर नहीं हैं, सब मजदूर ठेकेदारों के जरिये रखे गये हैं इसलिये यूनियन-फूनियन बनाने के लिये नेताओं को कोई स्थान नहीं मिला। फिर भी लीडरों ने मजदूरों की चौतरफा और अनेकानेक बातों को माँग-पत्र में समेटने की कोशिश की। गुड़गाँव में 18 सितम्बर को प्रदर्शन। फिर 19 को यूनियन लीडर कुछ मजदूरों को ले कर कम्पनी से मीटिंग करने गुड़गाँव गये। मैनेजमेन्ट ने 25 महिला और 12 पुरुष मजदूरों के नाम लिये और उन्हें छोड़ कर बाकी के फैक्ट्री में आने की बात की। फैक्ट्री गेट पर बैठे 400 स्त्री-पुरुष मजदूरों ने सूचना मिलते ही इसे ठुकरा दिया।

जय उशिन के स्त्री-पुरुष मजदूरों की चर्चा हजारों फैक्ट्रियों के दायरे के बाहर भी होने लगी। दिल्ली में विश्वविद्यालयों के छात्र भी उनसे मिलने पहुँचने लगे। मजदूरों के नकेल डालने के लिये कोई नेता नहीं थे इसलिये स्त्री-पुरुष वरकर खुल कर और विस्तार से अपनी बातें कर रहे थे। पीने के पानी तथा भोजन का प्रबन्ध कर लिया था और पास में नाहरपुर गाँव में सहेलियों के कमरों पर जा कर महिला मजदूर नहा-धो आती थी।

कम्पनी को कुछ समझ नहीं आ रहा था। बात बढती जा रही थी और लक्षण इसके और बढने के साफ-साफ दिखने लगे थे। कम्पनी ने रियायतें दी और 24 सितम्बर को सब मजदूरों को ड्युटी पर ले लिया। कोई नोटिस नहीं लगाया है पर एक ठेकेदार बोल रहा था कि तनखा में 2000 हजार रुपये बढाये हैं। वर्ष में 30 छुट्टियाँ...... अब तक किसी त्यौहार की छुट्टी नहीं देते थे, बदले में काम करवाते थे पर इधर दशहरे और बकरीद की छुट्टी की सूचना कम्पनी ने दे दी है।

✶ बी-33 और बी-134 ओखला औद्योगिक क्षेत्र फेज-1, दिल्ली स्थित ***वीयरवेल*** कम्पनी की फैक्ट्रियों में मजदूरों ने 1 सितम्बर को उत्पादन बन्द कर दिया और फिर 5 सितम्बर को काम आरम्भ किया।

पिछले वर्ष बोनस 5280 रुपये दिया तब विरोध में वीयरवेल कम्पनी की बी-61 स्थित फैक्ट्री में काम बन्द किया था। काम बन्द हुये 1 घण्टा हुआ तब जनरल मैनेजर ने आ कर कहा था कि अगले वर्ष बढा देंगे। उस समय बी-134 स्थित फैक्ट्री के मजदूर विरोध में शामिल नहीं हुये थे। इस बीच बी-61 वाली फैक्ट्री बी-33 में शिफ्ट हो गई है और कम्पनी की नोएडा में एक बहुत बड़ी फैक्ट्री बनी है।

कम्पनी बोनस की राशि मजदूरों को बिना बताये सीधे बैंक खातों में भेज देती है। पता लगे तब तक कुछ लोग पैसे निकाल चुके होते हैं। फूट पड़ जाती है। इसलिये इस वर्ष 25 जुलाई को ही मजदूरों ने परसनल वालों से बात की। इस बार बी-33 और बी-134, दोनों फैक्ट्रियों के मजदूरों ने आपस में तालमेल बढाये। परसनल वालों से सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिलने पर दोनों फैक्ट्रियों में मैनेजरों को कहा। साहबों ने एक हफ्ते का समय माँगा पर तीन सप्ताह तक कोई उत्तर नहीं दिया।

तब मजदूरों ने दूसरी पहल की। दोनों फैक्ट्रियों में मजदूरों ने 1 सितम्बर को सुबह 9 बजे मशीनें शुरू नहीं की। फैक्ट्रियों के अन्दर ही बैठे, मजदूरों ने फैक्ट्रियों पर से कम्पनी का कब्जा ढीला किया, खुले माहौल में आपस में खूब बातचीतें हुई। जनरल मैनेजर और एक डायरेक्टर आये, बोले कि बोनस 5280 रुपये ही बनता है, इतना ही मिलेगा। बी-33 और बी-134 में 2, 3 और 4 सितम्बर को भी मशीनें बन्द और फैक्ट्रियों के अन्दर मजदूरों में आपस में ढेरों चर्चायें। कम्पनी ने पीने के पानी और शौचालय के पानी की लाइनें बी-33 में 2 सितम्बर को काट दी और 5 सितम्बर तक कटी रही। फिर 5 सितम्बर को मैनेजिंग डायरेक्टर बी-134 फैक्ट्री में पहुँचा और बोला कि 1000 रुपये बढा देंगे, काम शुरू करो। बी-134 में काम आरम्भ होने के कुछ देर बाद बी-33 में भी मजदूरों ने मशीनें चला दी। बी-33 में सिर्फ सिलाई होती है, यहाँ कार्य करते 380 टेलर और बी-134 के 225

सिलाई कारीगर, 70 फिनिशिंग वरकर, तथा धागे काटने वाली 40 महिला मजदूर 5 दिन काम बन्द करने में सहभागी थे। झुकने के दस दिन बाद कम्पनी ने सी सी टी वी में तसवीरों का हवाला दे कर दस मजदूरों का हिसाब बनाया पर मजदूरों का विरोध देख कर तत्काल अपने कदम वापस खींच लिये।

★ प्लॉट 192 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर स्थित ***मुन्जाल किरियु*** फैक्ट्री के 225 स्थाई मजदूर 24 सितम्बर से फैक्ट्री गेट के बाहर बैठे हैं। फैक्ट्री में उत्पादन कार्य हो रहा है। सितम्बर अंक में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों की कुछ बातें थी, यहाँ स्थाई मजदूरों की कुछ बातें हैं।

स्थाई मजदूर एच एम एस से जुड़े और फैक्ट्री यूनियन के रजिस्ट्रेशन के लिये 22.2.2013 को चण्डीगढ आवेदन दिया तब 5 को नौकरी से निकाल दिया गया। खींचातान के बाद 26.11.2013 को मैनेजमेन्ट-यूनियन दीर्घकालीन समझौता हुआ और बाध्यकारी समझौते को महीना भी नहीं हुआ था कि मजदूरों ने प्रशिक्षण पूरा होने पर 3 को स्थाई नहीं किये जाने पर काम बन्द कर दिया। उत्पादन 25 दिन बन्द रहा, कम्पनी ने 64 स्थाई मजदूर निलम्बित किये, सहायक श्रमायुक्त की मध्यस्थता में 15.1.2014 को समझौता, 49 का निलम्बन समाप्त, 15 की घरेलू जाँच, दोषी पाये जाने पर भी डिसमिस नहीं (डिसमिस से कम सजा)। नेताओं द्वारा फैक्ट्री गेट पर जीत के भाषण।

अप्रैल 2014 में कम्पनी ने जाँच में दोषी घोषित का हवाला दे कर ''क्यों नहीं डिसचार्ज किया जाये ?'' पूछा तब मुन्जाल किरियु के स्थाई मजदूरों ने 1.5.2014 को एच एम एस छोड़ दी और एटक से जुड़े। और, 26 अगस्त तक डिसचार्ज की सँख्या 8 हो गई। डिसमिस और डिसचार्ज वाली यह बात अगस्त 2012 में मारुति सुजुकी के मैनेजिंग डायरेक्टर के पत्रों में भी आई थी। उन साहब ने मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री के 546 स्थाई मजदूरों को अलग-अलग पत्रों में लिखा था कि डिसमिस कर सकते थे पर नरमी बरतते हुये डिसचार्ज कर रहे हैं। यानी, बर्खास्त नहीं कर रहे बल्कि नौकरी से छुट्टी कर रहे हैं। डिसमिस-डिसचार्ज की घुण्डी सुलझाने के लिये मुन्जाल किरियु स्थाई मजदूरों ने सहायक श्रमायुक्त को, डी सी को ज्ञापन दिये और 1 सितम्बर से काले बिल्ले लगाने लगे।

कम्पनी ने 22 सितम्बर को मशीन शॉप के 25 ऑपरेटरों के लॉकर तुड़वाये और इन 25 स्थाई मजदूरों पर चोरी का आरोप लगा कर धमकाने लगी। फिर 23 सितम्बर को मैनेजमेन्ट ने कुछ लोगों के साथ समझौता किया, सुनाने पर जिसे स्थाई मजदूरों ने ठुकरा दिया। समझौता करने वाले 7 लोग 24 सितम्बर को सुबह 6 बजे की शिफ्ट में समझौता मन्जूर नहीं कहते हुये सब मजदूरों को साथ ले कर युटिलिटी प्लान्ट में बैठ गये। उत्पादन ठप्प। फैक्ट्री में 50-60 पुलिस वाले पहुँचे। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को धमका कर काम पर लगाया। और थोड़ी देर बाद, जो अगुआई कर रहे थे उन्होंने सहकर्मियों को धमकाना शुरू किया तथा स्वयं जा कर मशीनें चलाने लगे। पाँच घण्टे बन्द रहने के बाद उत्पादन आरम्भ हो गया। साहब लोगों ने बदतमीजी बहुत बढा दी।

ए-शिफ्ट मजदूर 2 बजे बाहर आये तब बी तथा सी शिफ्टों के मजदूर उनका इन्तजार कर रहे थे। पहले बी-शिफ्ट के मजदूरों के अन्दर जाने और ए-शिफ्ट वालों को रिलीव करने पर ही ए-शिफ्ट वालों को फैक्ट्री से निकलने देते थे। कई फैक्ट्रियों में इस प्रकार दो शिफ्टों के मजदूरों के एक ही समय फैक्ट्री में होने के वक्त उठे कदमों से कम्पनियाँ घबराई हैं। मुन्जाल किरियु में 1.8.2014 से एक शिफ्ट के फैक्ट्री से निकलने के बाद ही दूसरी शिफ्ट को अन्दर जाने देते हैं। ए-शिफ्ट वालों की आपबीती सुन कर सब स्थाई मजदूरों ने फैक्ट्री में नहीं जाने का फैसला किया। इस प्रकार 24 सितम्बर को दोपहर 2 बजे बाद से स्थाई मजदूर फैक्ट्री के बाहर बैठे हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में करीब 100 डिप्लोमा-डिग्री ट्रेनी और चन्द स्थाई मजदूरों के साथ काम कर रहे हैं। फैक्ट्री में उत्पादन जारी है।

मुन्जाल किरियु के स्थाई मजदूरों ने 25 सितम्बर को एटक छोड़ दी और पुनः एच एम एस से जुड़ गये हैं। गेट मीटिंग 30 सितम्बर को, श्रम अधिकारी के यहाँ 1 अक्टूबर की तारीख, मैनेजमेन्ट द्वारा 40 के निलम्बन की सूचना, अगली तारीख 7 अक्टूबर की, दो और डिसचार्ज ......

खतों-पत्रों से

★ लोकतंत्र आज की राजनीतिक मार्केट का टॉप ब्राण्ड है। सारी दुनियाँ में इसकी माँग है। यह आज के समय का चोखा धन्धा है।

—शिव दत्त, बाघा, बाँदा

★ अंत अत्याचार का, होगा तुम्हारे, है यकीन
हम को अपनी ज्ञान-गरिमा, शक्ति का भी है यकीन
छोड़ना होगा सताना, दे बराबर का हिसाब
है प्रतीक्षा वक्त की, नव ज्योति की तू कर यकीन
स्वार्थवश तू, मैत्रियों के कोप से, क्यूँ डर रहे हो,
अब बताओ।

— सुरेश कांटक, कांट, बक्सर

★ मैंने आई.आई.टी. कानपुर से 1972 में बी. टैक. की। पाँच वर्ष फरीदाबाद में एक फैक्ट्री में नौकरी की। फिर मैंने आई.आई.एम. बंगलुरू से 1979 में एम. बी.ए. की और एक सरकारी कम्पनी में लगा। यहाँ दस वर्ष नौकरी की। पहली नौकरी मैंने छोड़ी थी और दूसरी नौकरी भी मैंने छोड़ी —इस्तीफे नहीं दिये।

पूरा माहौल मुझे अमानवीय लगा। अपनी रुचि और क्षमता अनुसार मैं हालात बदलने की गतिविधियों में शामिल हुआ। मेरे सहपाठी इस दौरान विभिन्न क्षेत्रों में उच्च अधिकारी बने। पाँच वर्ष पहले मैं सहपाठियों के दो ई-मेल समूहों, iitk72 तथा iimb79 में शामिल हुआ। भारत में उद्योगों में मजदूरों की बदहाली मेरे लिये एक विषय था और इस पर मैं अपने सहपाठियों को ई-मेल भेजने लगा। आई आई टी और आई आई एम से हो कर उच्च अधिकारी बने सहपाठियों को मेरी बातें बहुत अखरने लगी। ऐसे में कुछ समय पहले मैंने स्वयं ही iitk72 समूह को ई-मेल भेजनी बन्द कर दी। इधर चण्डीगढ से प्रकाशित ट्रिब्यून अखबार में एक मजदूर के 7 माह के बच्चे के बारे में मैंने पढा। बच्चे का पिता ई.एस.आई. का नया सदस्य था (10 महीने से) इसलिये ''नियम'' शिशु के उपचार की अनुमति नहीं देते थे। इलाज बहुत महँगा था, दस लाख रुपये, मजदूर के बस से बाहर था इसलिये उसका बच्चा मर रहा था। मैंने सहज ढंग से यह बातें अपने iimb79 ई-मेल समूह को लिखी और इसे सहानुभूति से मानवीयता के आधार पर नियमों के मकड़जाल से निकालने का अनुरोध किया। आसमान टूट पड़ा। एक ने भी मर रहे शिशु के प्रति संवेदना नहीं दिखाई। कई योद्धाओं ने मेरी भर्त्सना की, मुझे गालियाँ दी....... कि मैं थोप रहा हूँ, कानून तोड़ने की कह रहा हूँ आदि-आदि। मुझे नैतिकता पर लम्बे-लम्बे उपदेश दिये जाने लगे। मुझ पर पाबन्दी लगाई जाये अथवा मुझे निष्कासित किया जाये इस पर चर्चा होने लगी।

मैंने अपना पक्ष रखा। इधर मैंने स्वयं ही iimb79 को ई-मेल भेजनी बन्द कर दी हैं।

यह दुख की बात है कि भारत में उद्योगों में शिखर पर बैठे पेशेवर लोगों में फैक्ट्री मजदूरों के प्रति संवेदना शून्य के स्तर पर है।

— एक मित्र

(अंग्रेजी से अनुवाद किया है और भावार्थ ही दे पा रहे हैं।)

उपरोक्त से स्पष्ट है कि कम्पनी ने योजना बना कर तैयारी की और छेड कर-उकसा कर स्थाई मजदूरों को बाहर बैठाया है। कुछ समय पहले लगभग ऐसा ही मैनेजमेन्टें ***बजाज मोटर, बैक्सटर, ऑटोलिव*** फैक्ट्रियों में कर चुकी हैं जिनका विवरण मजदूर समाचार के अंकों में है। मुन्जाल किरियु के स्थाई मजदूरों के लिये परिणाम उन जैसा नहीं हो इसके लिये क्या-क्या करें और क्या-क्या नहीं करें पर सोच-विचार आवश्यक है। परमानेन्ट वरकरों और टेम्परेरी मजदूरों के बीच हर कार्यस्थल पर तालमेलों को बढाना तो एक अनिवार्य आवश्यकता है ही। एक फैक्ट्री के मजदूरों के मसले को हजारों फैक्ट्रियों के मजदूरों का मसला बनाने की तरफ बढना भी अनिवार्य आवश्यकता है। बाहर बैठाये जाने पर मजदूरों द्वारा गत्तों पर अपनी बातें लिख कर हजारों मजदूरों के बीच जाना फरीदाबाद तथा ओखला औद्योगिक क्षेत्रों में कारगर पाया गया है।

कोलाहल होने दो



20 सितम्बर को कोलकाता में अलग-अलग कॉलेजों के एक लाख से ज्यादा छात्र बारिश में गाने गाते हुये सड़कों पर एकत्र हो कर कई घण्टे चले। एक बुजुर्ग कवि का कहना है कि कोलकाता शहर को उन्होंने ऐसा कभी नहीं देखा। ये चलना बिना किसी नेतृत्व, बिना किसी झण्डे, बिना किसी संगठन की अगुआई के था।

''हौक-हौक-हौक हौकौलोरॉब'' – कोलाहल होने दो। जब कई एक साथ बोलते हैं, उस भव्यता का रूप है कोलाहल। चुप्पी और बोल के द्वन्द्व को ये कोलाहल भेद देता है। ये कोलाहल आनन्ददायक है, साथ ही अबूझ भी। एक के टैन्शन में कुछ ने शामिल हो कर, कुछ के टैन्शन में लाख ने शरीक हो कर पूरे शहर को, इन्टरनेट में करोड़ों को, और दुनिया-भर के सौ देशों में लोगों को इस कोलाहल में खींच लिया। ''आमरा शैबई बोहिरागौतो'' – हम सब बाहरी हैं – के बिल्ले लगा कर छात्रों ने दुनिया को अपने साथ शरीक होने का निमंत्रण दिया। अन्दर-बाहर के विभाजन की भाषाओं को तहस-नहस कर दिया।

28 अगस्त कोलकाता की जादवपुर युनिवर्सिटी के ''विश्वविद्यालय उत्सव'' का आखिरी दिन था। शाम को एक छात्रा और उसके मित्र को अकेले में पा कर कुछ अन्य छात्रों ने उनके साथ हिंसा की – डराया-धमकाया, मारपीट की, छात्रा को जबरन हॉस्टल के कमरे में ले गये और शारीरिक बदतमीजी की। छात्रा ने अगले दिन उप कुलपति को शिकायत की और पुलिस में एफ.आई.आर. दर्ज करवाई। वाइस चान्सलर बोला की जाँच समिति बनाने में 15 दिन लगेंगे और बेहतर होगा कि इस दौरान वह यूनिवर्सिटी नहीं आये।

छात्रा के साथ सहपाठी आये। सहपाठियों ने कहा कि जाँच समिति तत्काल बनाई जाये और कार्यस्थल पर महिलाओं की सुरक्षा के लिये जो दिशा-निर्देश हैं उन्हें विश्वविद्यालय में लागू किया जाये

इनके साथ और भी छात्र जुड़ते गये। उप कुलपति के कार्यालय के बाहर छात्र बैठ गये – फिल्में देखने-दिखाने लगे, गाना गाने लगे, नये गीतों की रचना करने लगे, दीवरों पे चित्र बनाने लगे और ''कोलाहल होने दो'' का गाना फैल गया। यह गीत कुछ साल पहले बांग्लादेश के एक गायक ने रचा और गाया था।

16 सितम्बर की रात तक इस गीत को घूमते हुये 150 घण्टे हो गये थे। उप कुलपति ने कमाण्डो पुलिस को बुलाया, लाइट औफ करवाई और बेरहमी से छात्रों को पिटवाया।

अगले दिन छात्र गिटार, वायलिन और माउथ ओरगन बजाते हुये थाने के बाहर बैठ गये। पुलिस कंट्रोल रूम का नम्बर उन्होंने इन्टरनेट द्वारा विश्व-भर में फैला दिया। जगह-जगह से लोग पुलिस कंट्रोल रूम को फोन करने लगे। एक रेडियो जॉकी ने एक-दो फोन की बातचीत एफ एम रेडियो पर भी प्रसारित कर दी। पुलिस हैरान। अगले दिन जब पुलिस युनिवर्सिटी गई तब बिना हथियार थी। 20 सितम्बर को एक लाख छात्र सड़कों पर चले तब भी पुलिस ने हथियार साथ रखने से परहेज किया।

जादवपुर के छात्रों का ये कोलाहल कई और विश्वविद्यालयों में उठ रहा है। कोलाहल को बढने दो। ■

निमंत्रण

अक्टूबर में 26 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल प ावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

Ph. 0129-6567014

E-mail < baatein1@yahoo.co.uk >

- *अपने अनुभव व विचार मजदूर समाचार में छपवा कर चर्चाओं को और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।*
- *बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दें।*
- *महीने में एक बार छापते हैं, 13,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। चर्चाओं के लिए समय निकालें।*

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।